वो मेरी बेटी नहीं है

क्रिस्टी जॉर्डन-फैंटन
गैब्रिएल ग्रिमार्ड

मार्गरेट ने नाव से छलांग लगाई और वो अपने परिवार की ओर दौड़ी. उसे अपना आर्कटिक वाला घर छोड़े दो साल हो चुके हैं. वो अब बाहरी लोगों के स्कूल में पढ़ती है. घर वापसी पर वो बड़ी मुश्किल से अपने उत्साह को नियंत्रित कर पा रही है.

लेकिन उसकी मां एक पत्थर का बुत बनी खड़ी है.

"वो मेरी बेटी नहीं है," उन्होंने गुस्से में कहा.

मार्गरेट अब दस वर्ष की है, और उसके स्कूल के दो सालों ने उसे पूरी तरह बदल दिया है. वो अपनी स्थानीय भाषा भूल गई है और अपनी मां का बना खाना पचा नहीं पा रही है. उससे भी ज्यादा अब उसकी सबसे अच्छी दोस्त को उसके साथ खेलने की मनाही है. अब मार्गरेट को अपने लोगों के तौर-तरीकों को फिर दुबारा से सीखना होगा और एक बार फिर से दुनिया में अपना स्थान खोजना होगा.

वो मेरी बेटी नहीं है

ऐसा लग रहा था मानो एक हजार पक्षियों के पंख मेरे दिल में उड़ रहे हों. मैं अपने परिवार के पास वापस जा रही थी. मैं नाव के किनारे से कूदी और अपनी माँ की ओर भागी.

लेकिन माँ का चेहरा पत्थर के बुत तरह स्थिर था.

"वो मेरी बेटी नहीं है!" उन्होंने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा. मेरे दिल के पक्षी आसमान से धाराशाही होकर गिर पड़े.
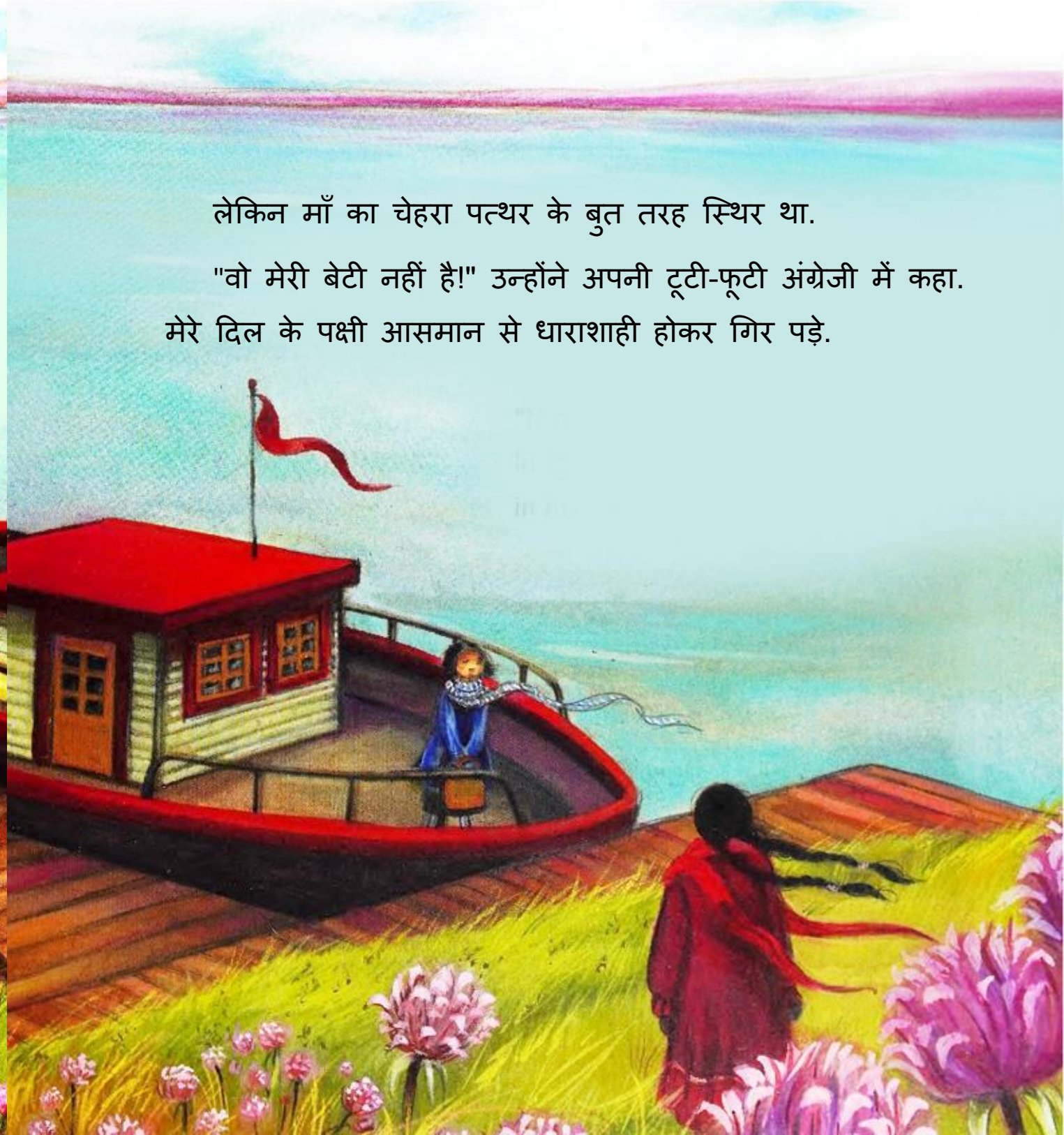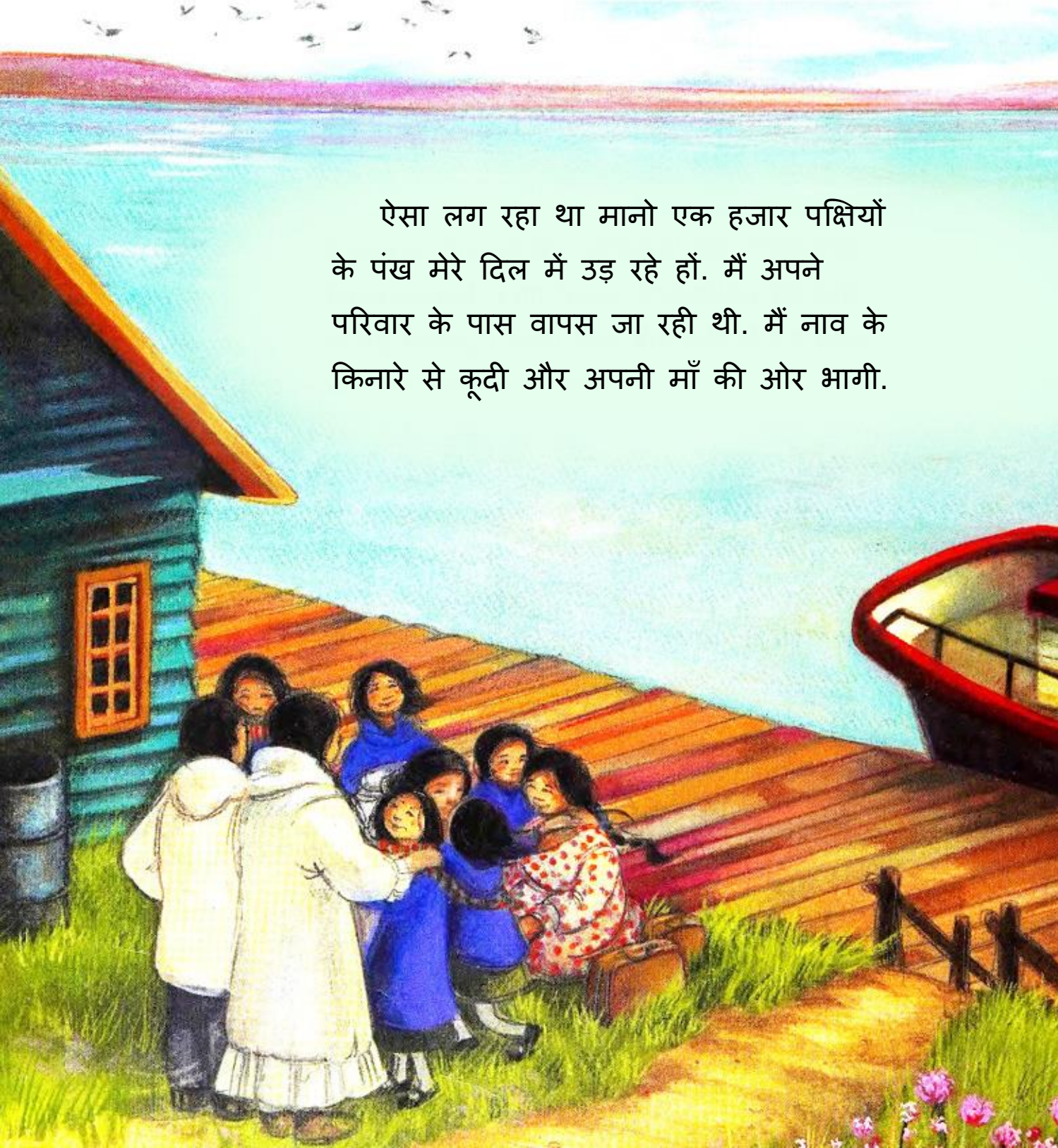
मुझे अपनी माँ की कठोर आँखों में अपने स्वयं के प्रतिबिंब की एक झलक दिखाई दी. जिस लंबी चोटी को उन्होंने कभी प्यार से गूँथा था, उसे अब काट दिया गया था. उसके साथ ही वो सब यादें विलीन हो गईं थी जिनसे वो मुझे याद करतीं.

मैं दो साल कठिन काम करने के बाद और बाहरी लोगों के स्कूल में खराब भोजन खाने के कारण मैं लंबी और बहुत दुबली-पतली हो गई थी.
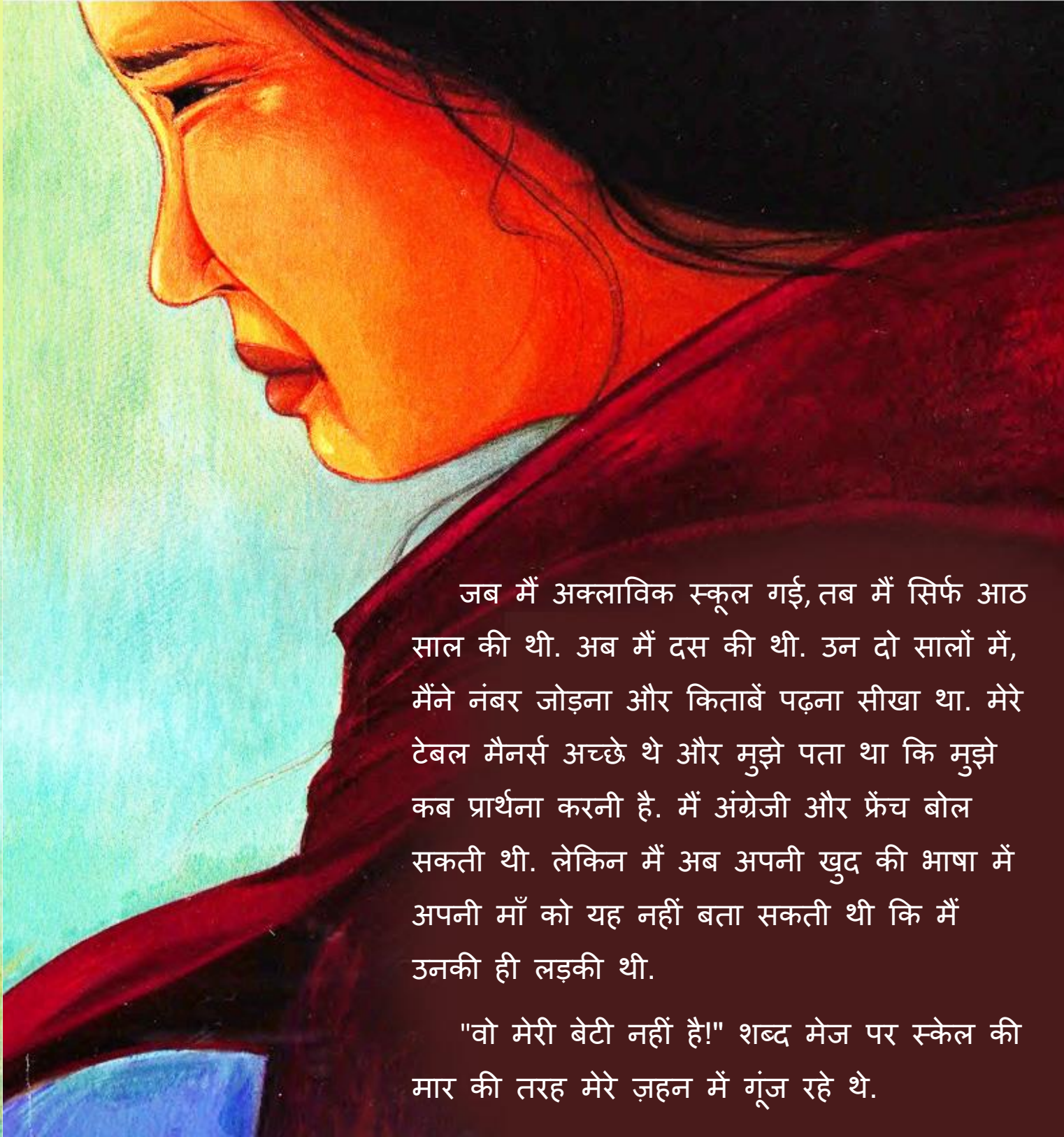
जब मैं अक्लाविक स्कूल गई, तब मैं सिर्फ आठ साल की थी. अब मैं दस की थी. उन दो सालों में, मैंने नंबर जोड़ना और किताबें पढ़ना सीखा था. मेरे टेबल मैनर्स अच्छे थे और मुझे पता था कि मुझे कब प्रार्थना करनी है. मैं अंग्रेजी और फ्रेंच बोल सकती थी. लेकिन मैं अब अपनी खुद की भाषा में अपनी माँ को यह नहीं बता सकती थी कि मैं उनकी ही लड़की थी.

"वो मेरी बेटी नहीं है!" शब्द मेज पर स्केल की मार की तरह मेरे ज़हन में गूंज रहे थे.

मैंने अपनी बहनों और भाई की ओर देखा. लेकिन वे मुझे घूरते ही रहे.

मैंने दौड़ने की कोशिश की, लेकिन मेरे पिता ने मुझे कसकर अपने गले लगा लिया.

"ओलेमौन," उन्होंने कहा. मैंने अपना इनुइट नाम एक लंबे समय से नहीं सुना था. मुझे लगा कि कहीं वो नाम मेरे पिता की आवाज के वजन के साथ अंडे के छिलकों की तरह चकनाचूर न हो जाए. स्कूल में लोग मुझे केवल मेरे ईसाई नाम मार्गरेट से ही जानते थे. मैंने अपने सिर को अपने पिता के सिलेटी चोगे में दफना दिया और उसे अपने आँसुओं से भिगा दिया. मुझे अपने पिता की मजबूत पकड़ की तुलना में अब एक अधिक कोमल स्पर्श महसूस हुआ, क्योंकि अब मेरी माँ की बाहें भी उनके साथ जुड़ गईं थीं. दोनों ने मिलकर अपने बीच मुझे सुरक्षित पनाह दी.
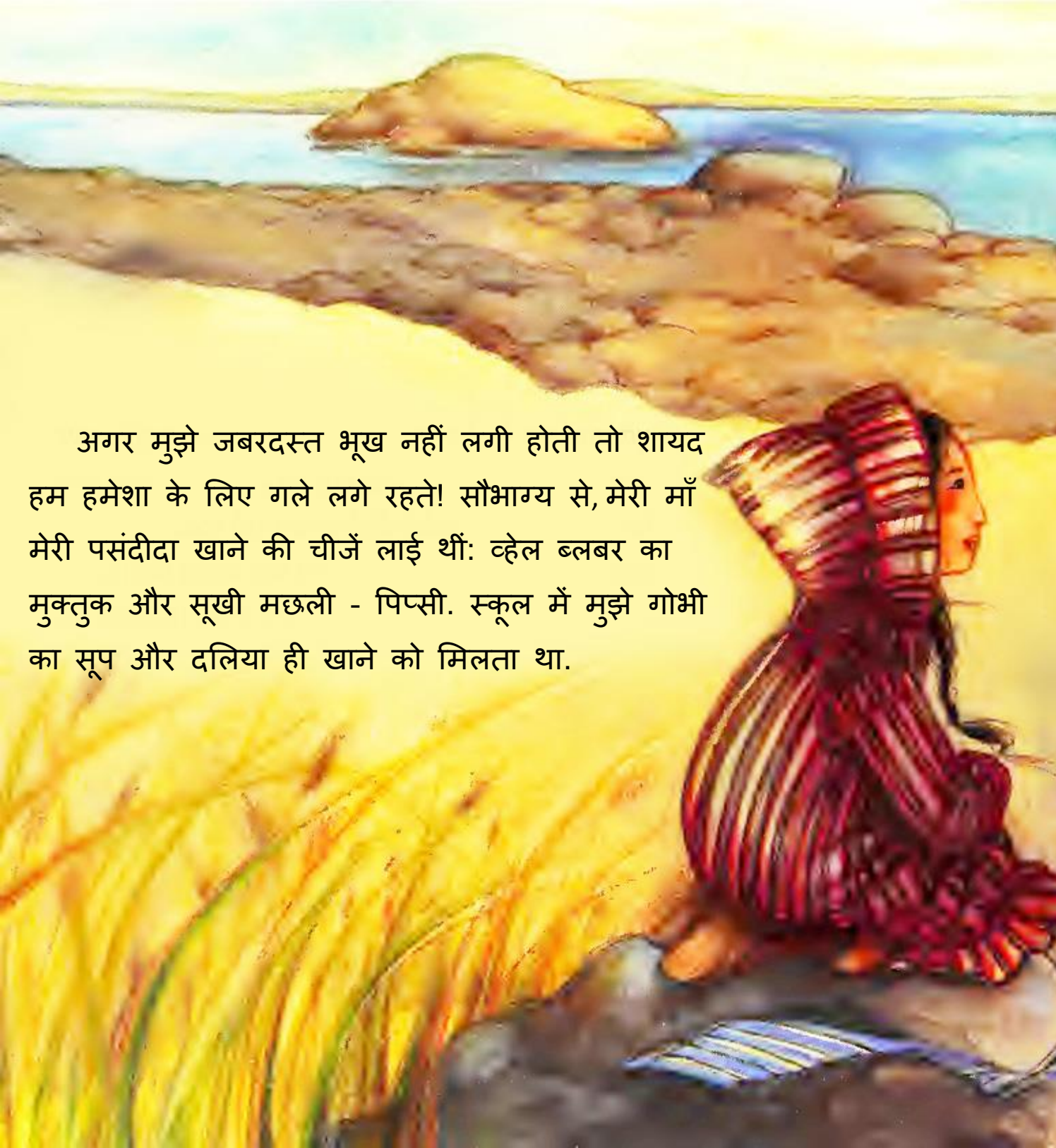
अगर मुझे जबरदस्त भूख नहीं लगी होती तो शायद हम हमेशा के लिए गले लगे रहते! सौभाग्य से, मेरी माँ मेरी पसंदीदा खाने की चीजें लाई थीं: व्हेल ब्लबर का मुक्तुक और सूखी मछली - पिप्सी. स्कूल में मुझे गोभी का सूप और दलिया ही खाने को मिलता था.
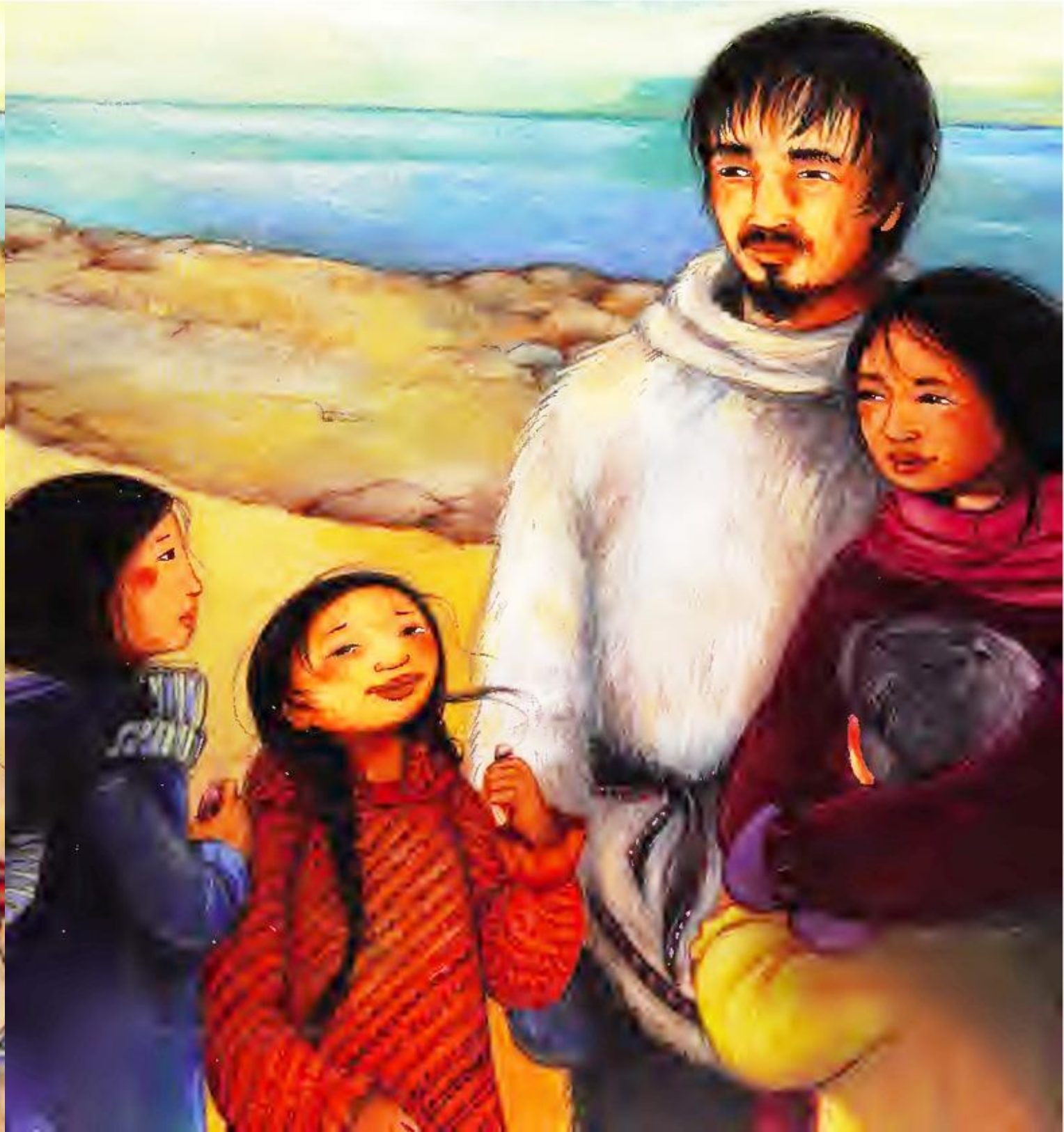
मैंने मुक्तुक का एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला. मैंने उसे चबाया और चबाया और रबड़ के टुकड़े जैसे उसे निगलने की कोशिश की. लेकिन मेरा गला सिकुड़ गया और मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा.

मुझे उसे थूक देना पड़ा.

मैं चुपचाप अपने परिवार के पीछे-पीछे घर की ओर चली. परिवार के सभी लोग एक-दूसरे से बतिया रहे थे. मैंने सोचा कि मैं किस तरह का जीव बन गई थी. मुझे ऐसा नहीं लग रहा था कि अब मैं उस झुंड की सदस्य हूं.
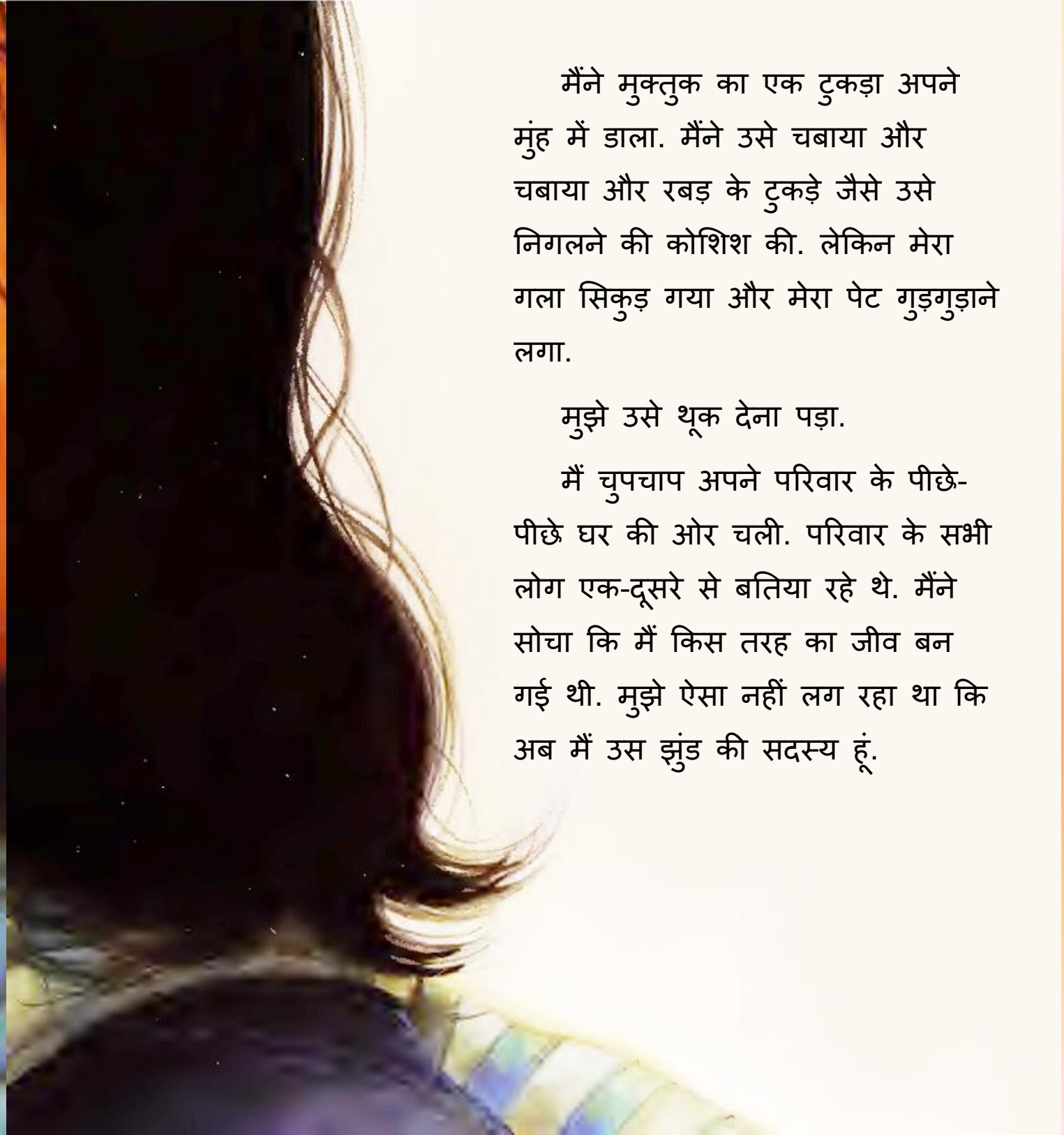
जैसे ही हम अपने तम्बू के पास पहुँचे, मैंने अपने पिता के स्लेज कुत्तों को देखा! मैं उत्सुकता से एक कुत्ते की ओर दौड़ी, लेकिन उसने एक भयंकर झटके के साथ मुझ पर झपट्टा मारा.

"जरा रुको, ओलेमौन कुछ देर बाद तुम में हमारी खुशबू फिर से आ जाएगी," पिता ने अंग्रेजी में मुझे आश्वस्त करते हुए कहा. पिताजी ने भी बचपन में, एक बाहरी स्कूल में अंग्रेजी सीखी थी.
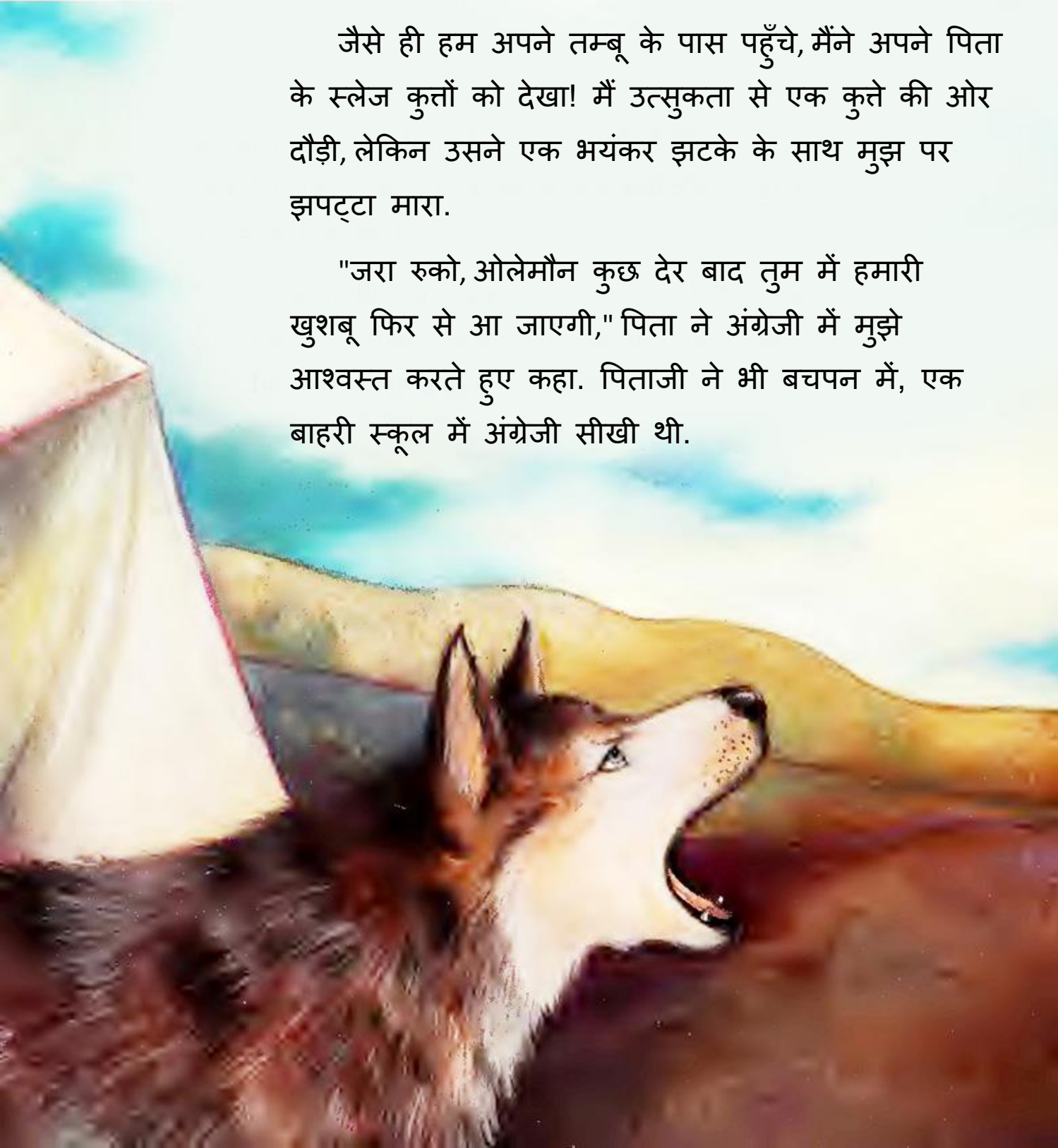
घर पर मेरे पहले कुछ सप्ताह कठिन थे. मैं अपनी माँ का बनाया हुआ खाना नहीं खा पाती थी. मैं लगभग हर चीज का अनुवाद करने के लिए अपने पिता पर निर्भित थी. और मैंने उपयोगी होने के लिए अपने आवश्यक कौशल खो दिए थे.

मैं शिकार के लिए जाल बनाना, खरगोशों की खाल उतारना, या बत्तखों के पंख नोचना भूल गई थी. मुझे प्रार्थना के छंद पढ़ना और अपना बिस्तर बनाना आता था, लेकिन उन चीजों से परिवार को खिलाने में मदद नहीं मिलती थी. काश मेरी बड़ी बहन दूर नहीं गई होती. वो भी बाहरी लोगों के स्कूल में पढ़ने गई थी. वो जरूर समझती कि एक अजनबी जैसे घर लौटना कितना मुश्किल होता होगा.

एक दिन, जब मुझसे मछली पकड़ने का जाल उलझ गया तो माँ ने मुझ से खेलने जाने को कहा.
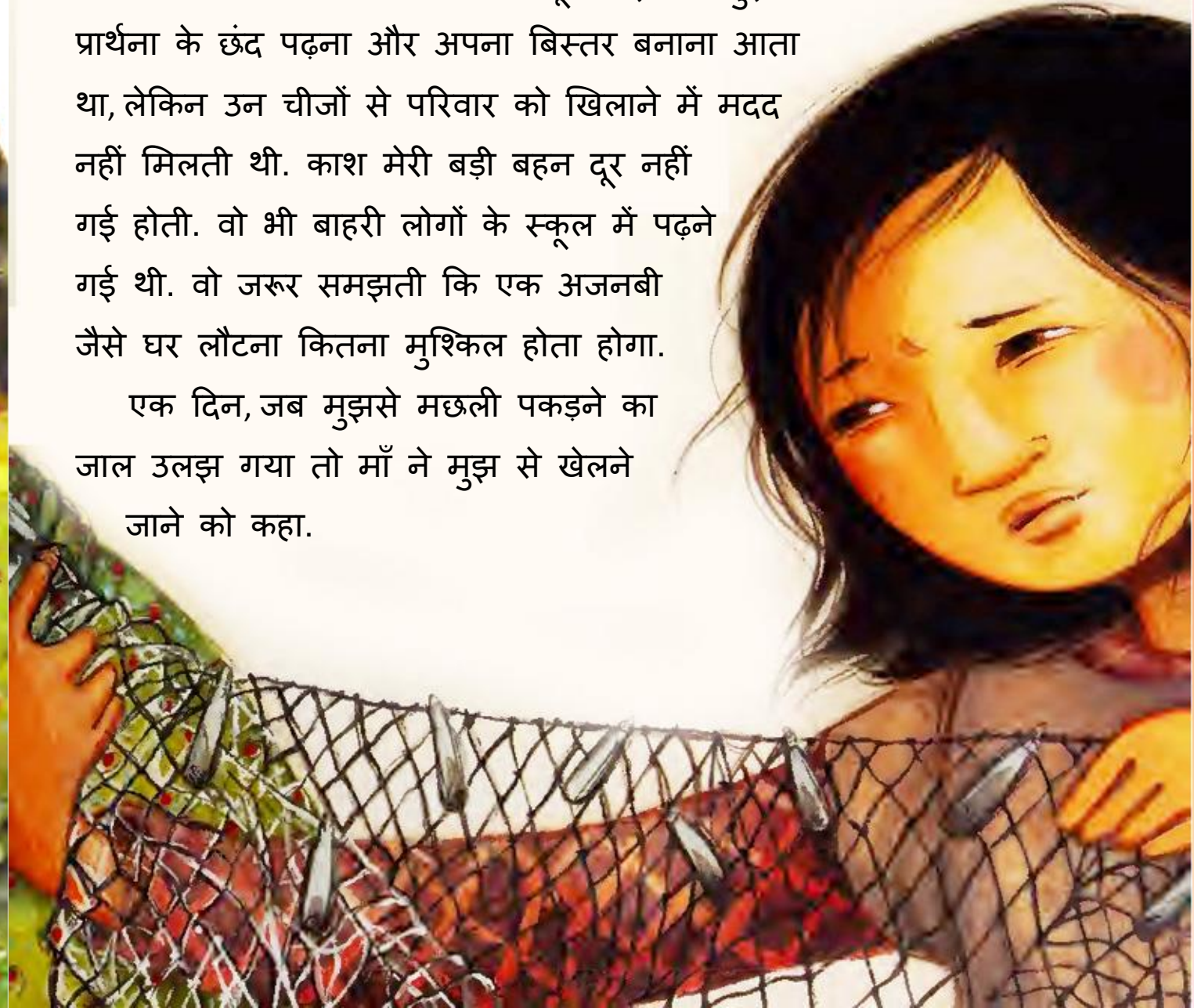
मैं सीधे अपनी दोस्त एग्नेस के घर दौड़ी हुई गई. वो स्कूल से मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी और मैं देखना चाहती थी कि क्या वो मेरे साथ बत्तखों के अंडों का शिकार करना चाहेगी - एक ऐसा भोजन जो हम दोनों को पसंद था.

उसकी माँ ने मुझे दरवाजे पर कड़ी नज़र से देखा. फिर एग्नेस भी उनके साथ आकर मिल गई.

"मेरी माँ और पिता कहते हैं कि मैं तुम अब एक बाहरी व्यक्ति हो. वे नहीं चाहते कि मैं स्कूल जाने वाले बच्चों के साथ खेलूँ," कहकर एग्नेस ने डरते हुए दरवाज़ा बंद कर दिया.

एग्नेस मेरी इकलौती दोस्त थी. उसकी बात ने मुझे लगभग उतनी ही गहरी चोट पहुंचाई जितनी मेरी माँ की बात ने, "वो मेरी बेटी नहीं है."

भूख और निराशा से मुझे चक्कर आने लगा. फिर मैं घर की ओर चली. मेरे पास आते ही एक कुत्ता उछल पड़ा. यह जानने के लिए कि क्या मैं हमेशा एक बाहरी व्यक्ति रहूंगी, मैंने उसकी ओर अपना दोस्ताना हाथ बढ़ाया. कुत्ते ने अपने नुकीले दांतों से जवाब दिया और उसने मेरी उंगलियों को काटा. मैं तंबू के एक कोने में लेट गई और अपनी पसंदीदा किताब तब तक पढ़ती रही जब तक मेरा परिवार वापस नहीं आया.

मेरी बहनों ने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ी थीं और उनको देखकर मुझे जलन हो रही थी. तब मेरी माँ ने अपना "उलू" मेरे हाथों में रखा. उन्होंने चाकू को मछली के पेट पर ऊपर की ओर रखा, और धैर्यपूर्वक मुझे दिखाया कि कैसे मछली को काटना है.
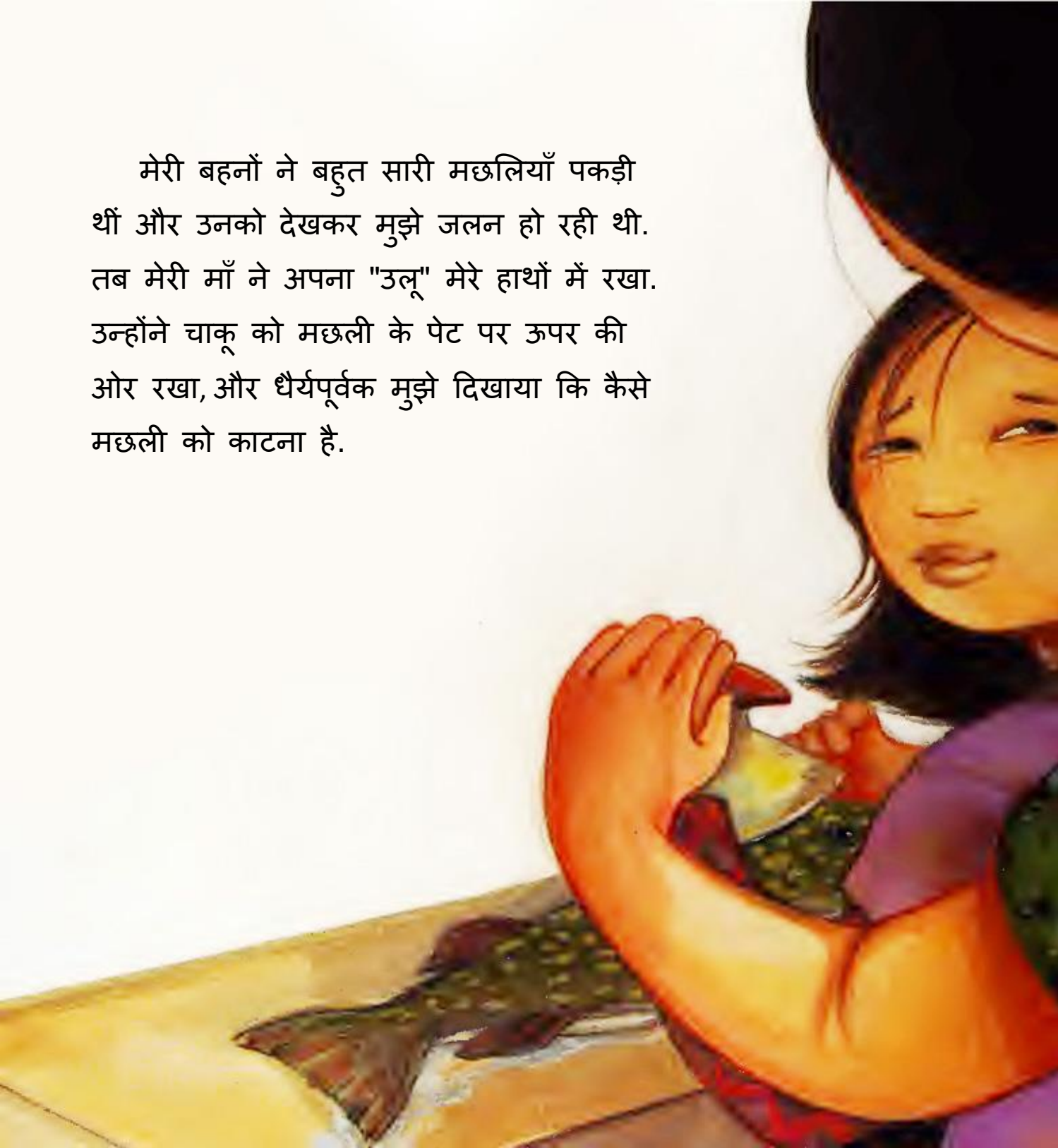
उस रात जब मैंने एक मछली का टुकड़ा अपने मुंह में रखा तब मैंने एक पल के लिए सोचा कि अगर स्कूल की नन मुझे अपने हाथों से खाते हुए देखतीं तो मुझे कितनी शर्म आती. लेकिन मुझे इस बात का गर्व था कि मैंने मछली तैयार करने में माँ की मदद की थी. और क्योंकि हमें खाए काफी समय हो गया था, इसलिए मैंने जमकर खाना खाया.

जब हवा फिर से ठंडी हुई, तो उनमें से एक कुतिया के कई पिल्ले जने. एग्नेस उन्हें बहुत प्यार करेगी! अब मैंने अपने लोगों के कई शब्द दुबारा सीख लिए थे, इसलिए मैंने एग्नेस से दुबारा मिलने की कोशिश करने का फैसला किया. मैंने एक नरम, छोटे पिल्ले को उठाया, उसे अपने चोगे के अंदर एक बच्चे की तरह छिपाया और फिर चलने लगी.

उसका दरवाजा खटखटाते समय मेरा हाथ कांपने लगा. पर किसी ने जवाब नही दिया. लंबे इंतजार के बाद मैंने हार मान ली. फिर मैं नीचे समुद्र तट पर चली गई. वहाँ मैंने अपने पिल्ले को बाहर निकाला और उसके साथ खेला, और उसे वो गाने सुनाए जो मुझे स्कूल में सिखाए गए थे.

रात के खाने के लिए देर से घर पहुंचने के कारण मैं पिल्ले को भूल गई और मैंने जल्दबाजी में अपना चोगा उतार दिया. पर मेरे पिता ने छलांग लगाई और फर्श पर गिरने से ठीक पहले उसे पकड़ लिया.

"ओलेमौन!" मेरी माँ चिल्लाई.

जब मैंने पिल्ले के लगभग बेजान शरीर को देखा, तो मुझे बड़ा पछतावा हुआ.

"तुम्हारे पास यह पिल्ला कब से है?" मेरे पिता ने पूछा.

मैंने कंधे उचकाकर कहा, "सुबह से."

मेरे पिता घुटने टेककर बैठ गए. "ओलेमौन, पिल्लों को अपनी मां के दूध की जरूरत होती है."

"क्या वो मर जाएगा?" मैंने पूछा.

"मुझे पक्का नहीं पता," उन्होंने उदास होकर कहा.

वो सब कुछ मेरे असहनीय था. मैं मुड़ी और रात में बाहर भागी, जहां उत्तरी रोशनी के इंद्रधनुषी पंख आकाश में नीचे नाच रहे थे. दादी ने एक बार मुझसे कहा था कि अगर मैंने सीटी बजाई तो वे पक्षी नीचे तक पहुंच जाएंगे और मुझे उठाकर ले जाएंगे. मैंने तब तक सीटी बजाई जब तक कि मेरे होंठों दुखने नहीं लगे, लेकिन उन्होंने भी मुझे नज़रअंदाज़ किया.
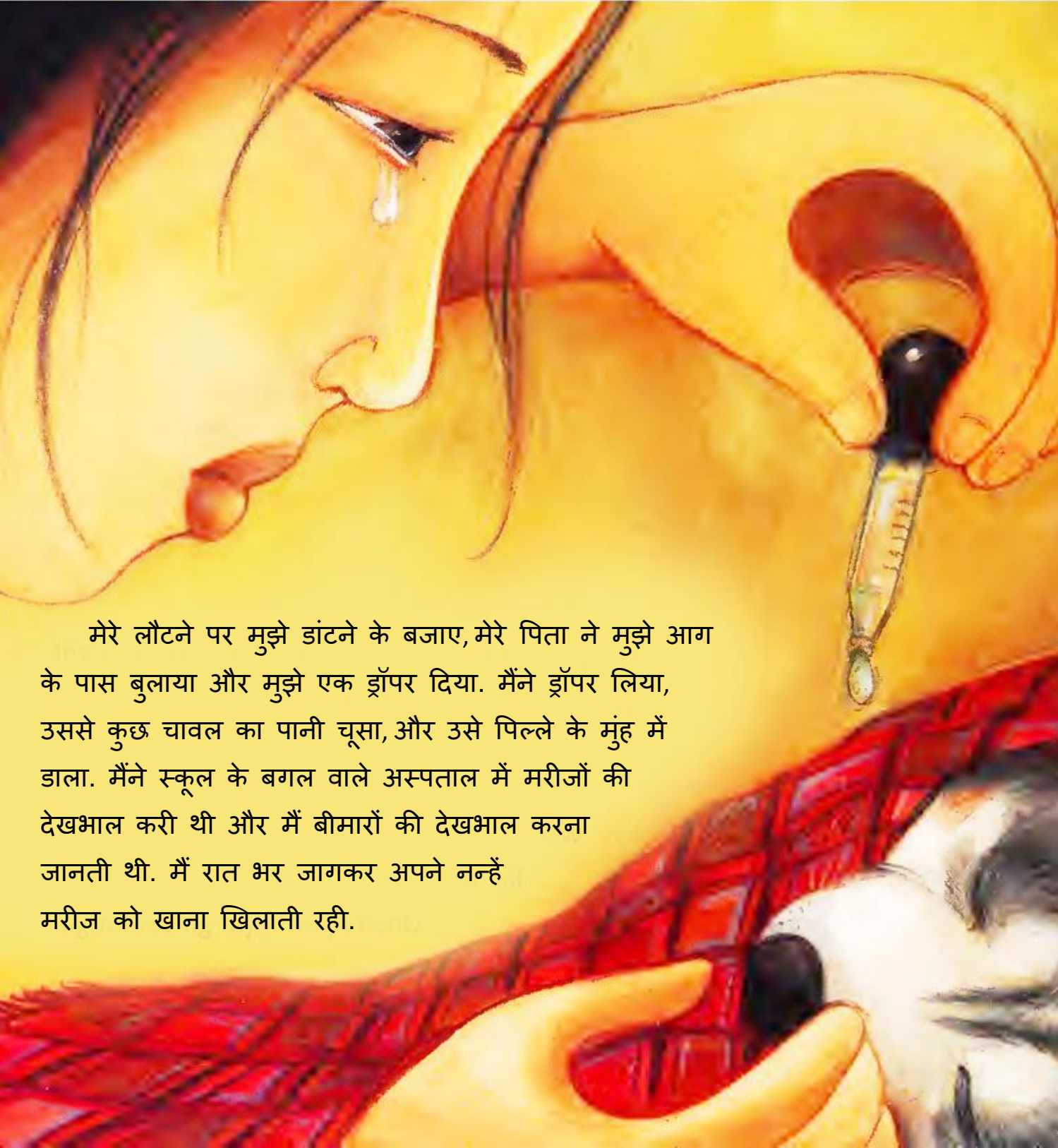
मेरे लौटने पर मुझे डांटने के बजाए, मेरे पिता ने मुझे आग के पास बुलाया और मुझे एक ड्रॉपर दिया. मैंने ड्रॉपर लिया, उससे कुछ चावल का पानी चूसा, और उसे पिल्ले के मुंह में डाला. मैंने स्कूल के बगल वाले अस्पताल में मरीजों की देखभाल करी थी और मैं बीमारों की देखभाल करना जानती थी. मैं रात भर जागकर अपने नन्हें मरीज को खाना खिलाती रही.

सुबह हम पिल्ले को बाहर ले गए. पहले तो उसकी मां ने उसे धक्का दिया. पर पिल्ला मिमियाया. मेरी तरह ही अब उसमें भी अपने परिवार की खुशबू नहीं बची थी. मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और पूरे मन से कामना की कि काश मैं उसे कभी नहीं ले गई होती. मैंने जब फिर से देखा तो मां अपने पिल्ले को चाट रही थी. मेरे पिता ने मेरा हाथ दबाया और वो मुस्कुराए.

जब बर्फ पड़ने लगी तब तक मेरे लिए खाना आसान हो गया था. अब मैं अपना मुक्तुक को पिल्ले को दे देती थी और पिप्सी खुद खा लेती थी. मैंने अपने परिवार की खुशबू वापस पा ली थी. फिर मैं अक्सर कुत्तों के साथ अपने पिता की मदद करती थी.

एक दिन, पिताजी ने मुझे शिकार यात्रा पर शामिल होने के लिए कहा. मैं बहुत उत्साहित हुई! मुझे कुत्तों की स्लेज मे यात्रा करना बहुत पसंद था.

हम बंजर टुंड्रा पर बहुत दूर पहुँच गए थे जब मेरे पिता ने पूछा, "ओलेमौन, क्या तुम कुत्तों के आदेशों को जानती हो?"

"हाँ," मैंने विश्वास के साथ कहा. "**गी** का अर्थ होता है दाएँ जाना और **हौ** का अर्थ बाएँ जाना."

पिताजी हँसे और फिर वो कुत्तों की स्लेज से उतर गए और उन्होंने मुझे कमान संभालने के लिए छोड़ दिया. कुत्ते तेजी से आगे बढ़ रहे थे और मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था. “हौ” मैंने उत्साह से पुकारा. मेरा मतलब था कि वे बाईं ओर मुड़ें और तालाब से बचें लेकिन मैंने अपने आदेश में कुछ गलती कर दी थी. कुत्ते तालाब की ओर चल दिए!

"गी-गी!" मैं चिल्लाई. कुत्ते एकदम दायीं ओर मुड़े.

"हौ हौ!" मैंने दुबारा कहा. वे इतनी जल्दी मुड़े, मैं लगभग स्लेज से उड़ने वाली थी. घबराकर, मैंने दोहराया "हौ हौ!" मेरे आदेश से कुत्ते एक लाइन में हो गए और रुकने के लिए धीमे हुए.

"वाह मेरी बेटी, ओलेमौन!" मेरे पिता चिल्लाए.

जैसे ही हम वापस शहर की ओर बढ़े, मुझे पिताजी के आगे और धावकों के सामने खड़े होने पर गर्व महसूस हुआ. मुझे यकीन था कि पिताजी को भी गर्व था. उसके बाद पिताजी ने मुझे अक्सर कुत्तों की स्लेज चलाने दी.

क्रिसमस की सुबह मैं केक की महक से जागी. मेरे पिता उपहारों का भार लेकर सांता बाबा की तरह बैठे थे. उन्होंने मेरे भाई को एक ट्रेन और मेरी बहनों को सुंदर चीनी-मिट्टी की गुड़िए दीं. पर उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं दिया.
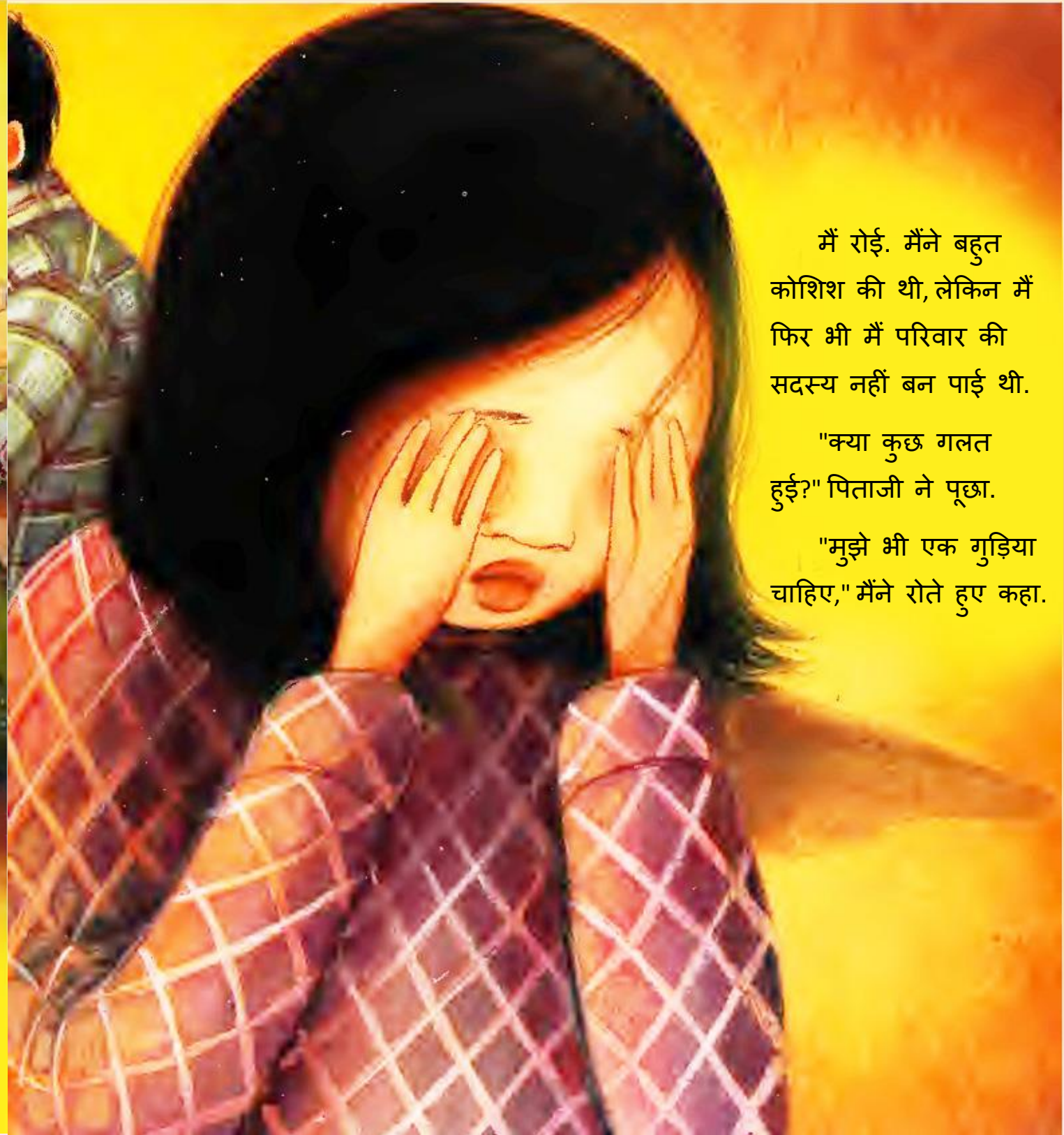
मैं रोई. मैंने बहुत कोशिश की थी, लेकिन मैं फिर भी मैं परिवार की सदस्य नहीं बन पाई थी.

"क्या कुछ गलत हुई?" पिताजी ने पूछा.

"मुझे भी एक गुड़िया चाहिए," मैंने रोते हुए कहा.

"मुझे लगा कि तुम गुड़िया के लिए अब बहुत बड़ी हो गई हो," उन्होंने मुझे चिढ़ाया. "पर शायद तुम कुत्तों की स्लेज के लिए अभी काफी बड़ी नहीं हो."

"मेरी अपनी कुत्तों की स्लेज!"
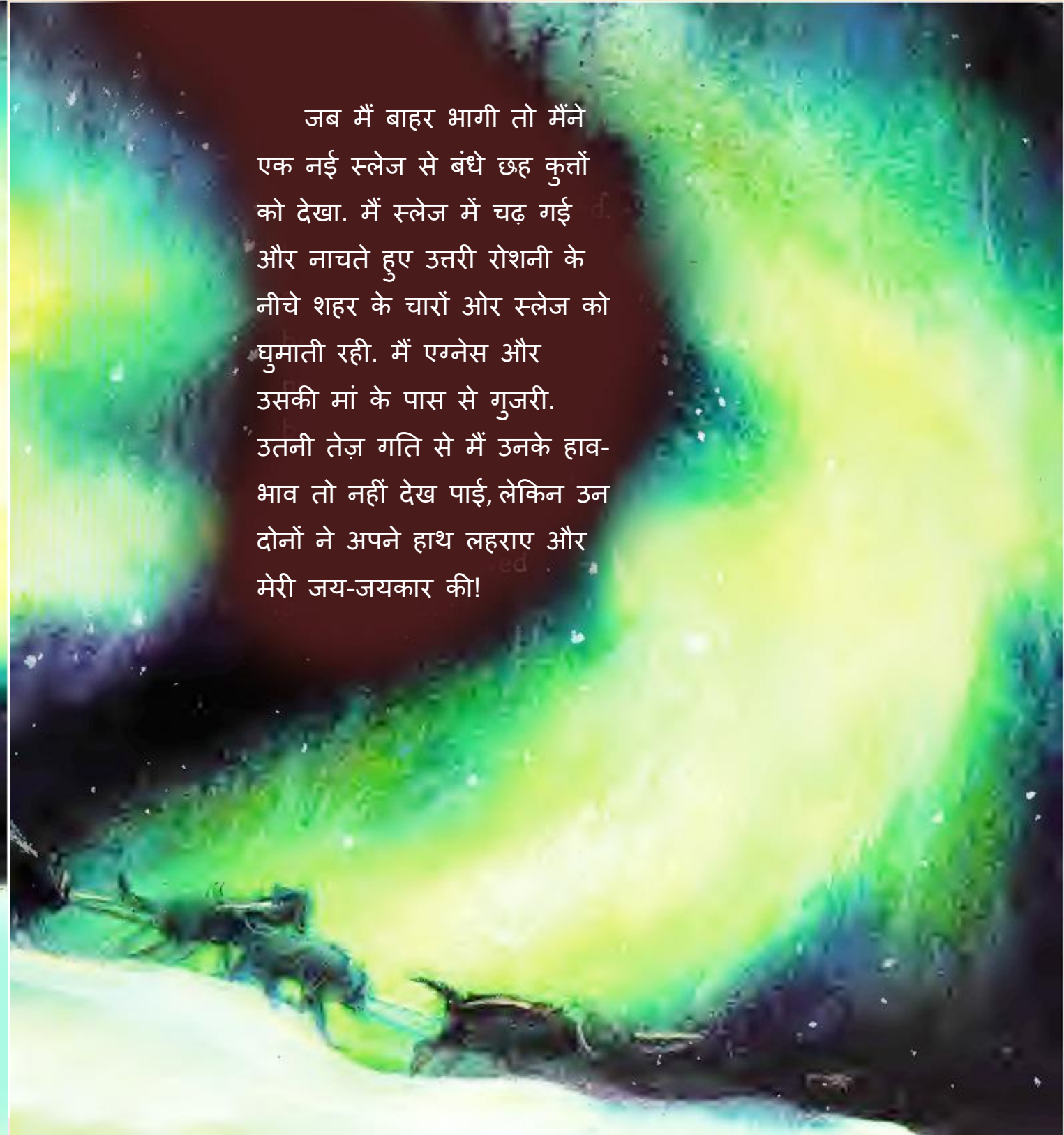
जब मैं बाहर भागी तो मैंने एक नई स्लेज से बंधे छह कुत्तों को देखा. मैं स्लेज में चढ़ गई और नाचते हुए उत्तरी रोशनी के नीचे शहर के चारों ओर स्लेज को घुमाती रही. मैं एग्नेस और उसकी मां के पास से गुजरी. उतनी तेज़ गति से मैं उनके हाव-भाव तो नहीं देख पाई, लेकिन उन दोनों ने अपने हाथ लहराए और मेरी जय-जयकार की!

जैसे ही मैं घर के पास पहुँची, मैंने देखा कि मेरे पिता के पास उनके कुत्तों की स्लेज थी और वो मेरे भाई और बहनों ने अपनी स्लेज पर लाद रहे थे. मैंने अपनी स्लेज धीमा की जिससे मेरी माँ मेरे पीछे खड़ी हो जाएँ. मेरी पलकें आँसुओं से जम गई.

जैसे ही हम सब तेज पंखों वाले एक पक्षियों के झुंड की तरह भागे, मुझे मेरी माँ की आवाज़ अपने कानों में सुनाई दी. "मेरी बेटी!" वो गर्व से चिल्लाईं. और फिर पक्षी मेरे हृदय में एक बार फिर ऊंची उड़ान भरने के लिए उठ खड़े हुए.

समाप्त